दादाभाई नौरोजी (Dadabhai Naoroji) उदारवादी नेता

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के शैशव काल के नेताओं में दादाभाई नौरोजी का नाम सबसे पहले आता है। दादाभाई नौरोजी 'भारत के वयोवृद्ध महापुरुष' (The Grand old man of India) थे, जिन्होंने कांग्रेस के साथ उसके नाम से जुड़कर शेष जीवनभर उसकी सेवा की। इन्होंने 61 वर्ष तक भारत की सेवा की। 40 वर्ष कांग्रेस की स्थापना से पहले और 21 वर्ष कांग्रेस की स्थापना के बाद। डॉ० पट्टाभि सीतारमैया ने उनके बारे में लिखा है कि राष्ट्र के जाज्वल्यमान नेताओं की सूची में पहला नाम दादाभाई नौरोजी का है, जिन्होंने कांग्रेस के साथ उसके जन्म से सम्पर्क स्थापित कर जीवन पर्यन्त उसकी सेवा की और संगठन विकास के सब पहलुओं में उसके साथ रहे। उन्होंने कांग्रेस की प्रशासन संबंधी शिकायतों को दूर करने वाली संस्था की तुच्छ स्थिति से ऊपर राष्ट्रीय संस्था को गौरवपूर्ण स्थिति तक पहुँचाया, जिसने स्वराज को अपना निश्चित उद्देश्य बनाकर उसकी प्राप्ति के लिए कार्य करना प्रारंभ किया। इन्होंने अटल रूप से पूर्ण निष्ठ स्वार्थ और शक्ति से मातृभूमि की सेवा की।

दादाभाई नौरोजी ने तीन बार कांग्रेस के सभापति का पद ग्रहण किया। उन्होंने अपने जीवन काल में कम से कम तीन संस्थाएँ स्थापित की जिनमें अधिकांश का उद्देश्य देश की राजनीतिक प्रगति करना था। शिक्षा और समाज सुधार के लिए भी संस्थाएँ खोली। 'बम्बई एसोसिएशन' नामक प्रांतीय राजनीतिक संस्था की स्थापना में उनका प्रमुख हाथ था। देशहित के लिए समर्थन प्राप्त करने हेतु उन्होंने इंग्लैण्ड में एक 'British India Society' की स्थापना की। एक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। वे कुछ समय तक बड़ौदा के प्रधानमंत्री रहे तथा वहाँ पर कई सुधार कार्य किए।

ये पक्के उदारवादी नेता थे जिन्हें अंग्रेजों की न्यायप्रियता में पूर्ण विश्वास था। वे पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रशंसक थे। उनके विचार में भारत का ब्रिटेन से संबंध भारत के लिए हितकारी होगा। क्रमिक सुधारों तथा संवैधानिक विधियों में विश्वास था। भाषा बड़ी ही शांत और संयमित था। लेकिन आगे चलकर सरकार की प्रतिगामी नीति के कारण स्वभाव और भाषा में उग्रता आ गई जिसके कारण वे इंग्लैण्ड में स्थायी रूप से बस गये। वे प्रथम भारतीय थे जो ब्रिटिश कॉमन सभा के सदस्य चुने गये थे।

वयोवृद्ध तथा सर्वमान्य राजनीतिज्ञ के रूप में उन्होंने 1906 ई०

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

ने कांग्रेस को आपसी संघर्ष से बचाया। बंग विभाजन के प्रश्न पर उग्रवादियों को पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी थी तथा उसकी आशंका भी थी कि काँग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए उग्रवादियों तथा सुधारवादियों में खुल्लम-खुल्ला संघर्ष होगा। लेकिन, दोनों पक्षों ने दादाभाई नौरोजी को अध्यक्ष पद के लिए स्वीकार कर लिया और काँग्रेस के सिर से संकट टल गया। इसी अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने घोषणा की कि काँग्रेस का लक्ष्य 'स्वशासन अथवा स्वराज्य की प्राप्ति है। इनके नेतृत्व में काँग्रेस ने उग्रवादी युग में पदार्पण किया तथा कतिपय क्रांतिकारी कार्यक्रमों को अपनाया। बहिष्कार आन्दोलन को वैधता प्रदान करना, स्वदेशी आन्दोलन को काँग्रेस का सहयोग दिलवाना तथा राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यक्रम को लागू करने का पूर्ण श्रेय दादाभाई नौरोजी को ही था।

भारतीय जनता की निर्धनता उनके लिए गहरी चिन्ता का विषय था। उन्होंने अपने भाषणों तथा लेखों में भारतीयों की निर्धनता के कारणों का उल्लेख किया। अपनी 'गरीबी और भारत में अ-ब्रिटिश राज' नामक कृति में उन्होंने इस समस्या का विशेष रूप से विश्लेषण किया। उनका कहना था कि ब्रिटिश शासन के परिणाम स्वरूप भारत की संपत्ति ब्रिटेन में खिंची जा रही है और भारत प्रतिदिन निर्धन होता जा रहा है। गोपाल कृष्ण गोखले का मत है कि "यदि किसी मनुष्य में भगवान का निवास है तो वह दादाभाई है।

सी॰ वाई॰ चिन्तामणि ने दादा भाई नौरोजी के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि " वे महान आत्मा थे, दूसरे के प्रति बड़े उदार विचार रखते थे और उनका किसी से व्यक्तिगत द्वेष नहीं होता था। उच्चतम व्यक्तिगत चरित्र और महान जनसेवा इन दोनों की दृष्टि से दादाभाई नौरोजी अपने देशवासियों के लिए सबसे ऊँचा आदर्श थे। भारत के सार्वजनिक जीवन में अनेक उज्जवल रत्न और निःस्वार्थ देशभक्त हुए हैं लेकिन हमारे जमाने में उनमें से किसी की भी तुलना दादाभाई नौरोजी से नहीं की जा सकती है।

(समाप्त)

डॉ॰ राजू मोची
विभागाध्यक्ष-राजनीति विज्ञान
डी॰के॰ कॉलेज, डुमराँव
दिनांक 07/08/20